

सत्र 6: व्यवस्थाविवरण 12

डॉ सिंधिया पार्कर

यह डॉक्टर सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण 12 पर सत्र 6 है।

परिचय

ठीक है, तो हमने अंततः इसे व्यवस्थाविवरण के मूल में बना लिया है। तो, हम व्यवस्थाविवरण 12 को देख रहे हैं। और वास्तव में, अध्याय में आने से पहले, हम वास्तव में इस व्याख्यान को दो भागों में विभाजित करने जा रहे हैं। पहला भाग उस जटिल जटिल विद्वत्ता के बारे में गहराई से जानने वाला है जो पूरी तरह से व्यवस्थाविवरण में, लेखकत्व के बारे में है। हमें किताब कहाँ से मिली? हमारे पास किताब क्यों है? यह कब लिखा गया था? ये सभी चीजें, इसलिए हम इसमें गोता लगाने जा रहे हैं, और फिर हम अध्याय 12 के बारे में बात करेंगे। जिस कारण से मैंने कानून कोड अनुभाग, अध्याय 12 की शुरुआत में लेखकत्व अनुभाग और पुस्तक के उद्देश्य को रखने का निर्णय लिया है। 26 के माध्यम से, ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यवस्थाविवरण में अध्याय 12 के कारण यह पता लगाने की कोशिश में बहुत सारी विद्वत्ता विकसित हुई है। व्यवस्थाविवरण क्यों लिखा गया था? तो, यह इस अध्याय पर निर्भर करता है, यही कारण है कि मैंने इस वार्तालाप को विशेष रूप से इस अध्याय में स्थानांतरित कर दिया है।

अब, इस व्याख्यान की शुरुआत में उन स्थानों की एक त्वरित समीक्षा के रूप में जहां हम पहले जा चुके हैं। तो, हमने पहले ही ऐतिहासिक अध्याय 1-3 के बारे में बात की है, और हमने 4, अध्याय 4 के बारे में बात की है, जो व्यवस्थाविवरण की धड़कन है, और इसने कुछ टीमों को प्रस्तुत किया है जिन्हें हमने पहले ही बार-बार दोहराया है। फिर हमने अध्याय 5 से 11 को देखा, और वे प्रेरक अध्याय हैं। वे ऐसे अध्याय हैं जो प्रेरक होने के लिए हैं। उन अध्यायों में इतिहास को न

भूलने के बारे में बहुत सारी बातें हैं ; कृपया याद रखें कि भगवान कौन है। यह अध्याय 5 से 11 तक प्रेरक, उत्साहवर्धक प्रकार के भाषण हैं।

कानून संहिता

अब हम कानून संहिता अनुभाग में प्रवेश कर चुके हैं। यह वह वर्ग है जो लोगों को डराता है लेकिन डरें नहीं। यह आकर्षक है, यह वास्तव में काफी दिलचस्प है, और इसलिए हम इसे खंडों में विभाजित करेंगे।

तो, कानून संहिताओं के बारे में दिलचस्प क्या है? इसे कहने का तरीका अजीब लग सकता है, लेकिन हम कानून कोड को दिलचस्प नहीं मानते हैं, लेकिन प्राचीन निकट पूर्व में, कानून कोड अस्तित्व के आदर्श तरीके को संप्रेषित करने का एक तरीका था, ताकि प्राकृतिक कानून जगत। अक्सर कानून संहिताएं सृजन आख्यानों से जुड़ी होती हैं। इसलिए, जब अन्य राष्ट्रों के पास अपनी रचना कथाएँ, दुनिया के अस्तित्व में आने के तरीके को समझाने के उनके तरीके थे, तो वे अक्सर किसी प्रकार की कानून संहिता के साथ समाप्त होते थे। वे कारण, जो कहानियाँ हम खुद को बताते हैं कि दुनिया कैसे शुरू हुई, वे कहानियाँ भी इस बात का समर्थन करने में मदद करती हैं कि यह विशेष राजा प्रभारी क्यों है और हमारे पास विशेष नियम क्यों हैं। तो, इसी तरह, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, मैं पहले से ही इस बारे में बात कर रहा हूँ कि जब आप इस भूमि में जाते हैं तो एक दृष्टि कैसी होती है, और इसमें संभावित रूप से एक ईडन की तरह, एक बगीचे की तरह बनने का अवसर होता है। इसमें ईश्वर के अच्छे स्वरूप को प्रतिबिंबित करने की क्षमता है। तो, इज़राइली कानून संहिता भी एक आदर्श तरीके को समझाने का एक तरीका है।

और हम यह तर्क दे सकते हैं कि क्या इस्राएली कभी कानून संहिता प्राप्त करने में सक्षम थे या नहीं, लेकिन यह मानक के रूप में स्थापित है। यह इस बात का मानक है कि भगवान आपके और आपकी संस्कृति के लिए यहां और अब इस विशेष भूमि में रहने के लिए क्या अच्छा कहते हैं।

हम पाएंगे कि यहां व्यवस्थाविवरण में कानून संहिता यहोवा को केंद्र में रखने के लिए बहुत विशिष्ट है। तो, ईश्वर इज़रायली पहचान और इज़रायली समाज का केंद्र है। इसलिए, न केवल जिस

तरह से वे खुद को समझते हैं बल्कि जिस तरह से वे अपने घरों में, अपने समुदायों में और अपने आस-पास की दुनिया में कार्य करते हैं।

हम यह भी पाएंगे कि यह कानून संहिता वाचा को प्रतिबिंबित करती है, लेकिन यह वाचा केवल समझने योग्य सत्य नहीं है। यह वाचा कुछ ऐसी चीज़ है जो दर्शाती है कि परमेश्वर का अपने लोगों के साथ किस प्रकार का संबंध है।

लेखकत्व - मध्य युग

ठीक है। इसलिए, इस कानून संहिता के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक मानसिकता रखते हुए, मुझे व्यवस्थाविवरण से संबंधित जटिलताओं के बारे में थोड़ा जानने दीजिए।

इसलिए, व्यवस्थाविवरण के साथ, जब लोग पेंटाटेच पढ़ते थे, हालाँकि बहुत प्रारंभिक इतिहास में, यह सोचा जाता था कि मूसा ने पेंटाटेच की सभी पाँच पुस्तकें लिखी हैं। लेकिन पहले से ही, मेरा मतलब है, स्पष्ट रूप से, इसमें व्यवस्थाविवरण के अध्याय 34 को शामिल नहीं किया जा सकता क्योंकि अध्याय 34 में मूसा की मृत्यु हो जाती है। और पहले से ही संक्षिप्त अध्ययन में जो हमने व्यवस्थाविवरण के बारे में किया है, हम पहले ही देख चुके हैं कि ऐसे समय होते हैं जब यह दिखता है जैसे कि जब मूसा के बारे में तीसरे व्यक्ति में बात की जा रही हो तो एक संपादकीय हाथ होता है।

तो, पहले से ही मध्य युग तक, यहूदी रब्बी और यहूदी विद्वान थे जो मानते थे कि ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे मूसा पेंटाटेच में सब कुछ लिख सके। अनेक कहानियाँ अलग-अलग तरीकों से लिखी गई हैं। कालानुक्रमिक बातें हैं। तो, दो अलग-अलग समयावधियों का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है।

तो पहले से ही, मध्य युग के समय तक, इस बात से संबंधित प्रश्न थे कि मूसा ने कितना लिखा? उसने क्या लिखा था? और किसी और ने क्या लिखा? तो, ये प्रश्न मध्य युग से पहले से ही लोग इस प्रकार की बातचीत कर रहे हैं।

लेखकत्व पर 17वीं सदी के विचार

17वीं सदी में, पहले से ही सत्रहवीं सदी में, और फिर, 17वीं सदी में अभी भी यहूदी विद्वत्ता के बारे में बात करते हुए, लोग पहले से ही कह रहे थे कि पेंटाटेच को मूसा के बाद संकलित किया गया था। तो, यही वह समय है जब हमें याद रखना होगा कि इस्राएलियों ने कहानियाँ सुनाईं। उन्होंने कहानियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। घटनाएँ कब घटित हुईं और उन घटनाओं का इतिहास कब लिखा गया, इसमें अंतर है। 17वीं शताब्दी में, लोग पूछ रहे थे कि आखिरकार चीज़ें कब लिखी गईं, और उन्हें एक इकाई बनाने के लिए कैसे संकलित किया गया जिसे अब हम पेंटाटेच कहते हैं?

3 कानून कोड: वाचा संहिता (उदा. 20-23), पवित्रता संहिता (लेव. 17-26), और ड्यूटेरोनोमिक संहिता (दि. 12-26)

हो सकता है कि वह चीज़ जो व्यवस्थाविवरण से काफी हद तक संबंधित है और जो बातचीत हम व्यवस्थाविवरण से संबंधित करने जा रहे हैं, वह यह है कि हम पेंटाटेच में देखते हैं कि कानून संहिता के तीन संस्करण हैं। तो, निर्गमन में एक कानून संहिता, कानूनों का एक संग्रह है। लैव्यिकस में एक है, और अब हमारे पास व्यवस्थाविवरण में एक है। इसका तात्पर्य यह भी है कि यदि मूसा ने पेंटाटेच लिखा था, तो हमें कानून के तीन संस्करणों की आवश्यकता क्यों है? और यदि हम कानून के इन संस्करणों को पढ़ें, तो वे सभी थोड़े अलग प्रतीत होते हैं। क्या वे अलग-अलग लेखक हैं? या क्या यह प्रत्येक कानून संहिता के पीछे एक अलग उद्देश्य व्यक्त कर रहा है?

मैं बस इसे बाहर फेंकना चाहता था कि कई लोगों ने परंपरागत रूप से सोचा है कि लेखक मूसा है, लेकिन सदियों से, लोग चर्चा करते रहे हैं कि यह और किस तरह से हो सकता है। अब, मैं विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा हूँ कि हम कानून संहिता के आधार पर लेखकत्व के बारे में क्या सीख सकते हैं क्योंकि हम अभी व्यवस्थाविवरण में यही अध्ययन कर रहे हैं।

तो, आइए यह विचार रखें कि हम कानून कोड की तुलना कर सकते हैं, जैसा कि आप इस स्लाइड में निर्गमन 20 से 23 में देखेंगे। ये निर्गमन में संकलित कानून हैं। लैव्यव्यवस्था में, वे अध्याय 17 से 26 में हैं। और जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, व्यवस्थाविवरण में, वे अध्याय 12 से 26 में हैं। आप सभी अलग-अलग कानून बना सकते हैं, और व्यवस्थाविवरण जिन कानूनों को दोहराता है वे काफी हद तक समान हैं निर्गमन में वाले। लेकिन लैव्यिकस के पास कानूनों का एक बिल्कुल अलग सेट है।

अब हम कानूनों के इन समूहों को अलग-अलग चीजें कहते हैं। इसलिए, हम कानूनों के निर्गमन समूह को कहते हैं, और हम इसे वाचा संहिता कहते हैं। लैव्यव्यवस्था में, क्योंकि लैव्यव्यवस्था यह बताने का प्रयास कर रही है कि एक अपवित्र लोग पवित्र ईश्वर के बगल में कैसे हो सकते हैं, आप उन दो चीजों को एक साथ कैसे लाते हैं? हम लेवितिकस अध्यायों को पवित्रता संहिता कहते हैं। और हम व्यवस्थाविवरण को व्यवस्थाविवरण संहिता कहते हैं। तो, वाचा संहिता, पवित्रता, संहिता ड्यूटेरोनोमिक संहिता है।

अब यदि आपको इन कोडों को पढ़ना है और उन्हें एक के बाद एक पढ़ना है, और यदि आप उनके बारे में खुला दिमाग रखते हैं, तो आप देखेंगे कि इन अध्यायों के बीच, इन विभिन्न कोडों के इन अध्यायों के बीच स्वर में अंतर हैं। .

इसने विद्वानों को यह कहने के लिए प्रेरित किया है। मुझे आश्चर्य है कि क्या हम पुस्तक के स्वर को पुस्तक की संरचना से ले सकते हैं, और शायद हम इसे एक समयावधि से मिला सकते हैं। अब, ऐसा लग सकता है कि वे इसे हवा से निकाल रहे हैं। वे नहीं जानते कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन मैं आपको एक तस्वीर दिखाना चाहता हूँ।

अगर मैं आपको इन सभी कारों की तस्वीर दिखाऊँ तो मैं कहूँगा कि यहां कारों का एक संग्रह है। क्या आप इन्हें क्रम में रख सकते हैं? तो, अगर आप गौर करें तो मेरे पास छह कारें हैं। और मान लीजिए कि मेरे पास एक फिल्म है, और इस फिल्म में, सभी छह कारें मौजूद हैं; आपको पता होगा कि यह थोड़ा अजीब है, लेकिन ऐसा नहीं है; यह किसी एक ही समय सीमा की कहानी नहीं बता रहा है। आप इन कारों को डेट कर सकते हैं, और यह आपको काफी सहज लग सकता

है। तो, बेशक, ये कारें, अगर हम उन्हें क्रम में रखें, तो वे सीएडीबीएफ ई पर जाती हैं। तो, वास्तव में, यह एक फ्रांसीसी कार है जो अभी तक अस्तित्व में नहीं है। यह एक आदर्श कार है, शायद भविष्य में कभी भी। इसे हाल ही में एक कार शो में दिखाया गया था।

ठीक है, तो यह आपको दिखाता है कि, जब यह ऐसी सामग्री है जिससे आप बहुत परिचित हैं, तो आपके लिए यह पहचानना बहुत आसान है कि ये कारें कब एक ही समयावधि की हैं और कब नहीं।

इसलिए, विद्वान, जब वे इन विभिन्न कानून संहिताओं, अनुबंध संहिता, पवित्रता संहिता और ड्यूटेरोनोमिक संहिता को पढ़ रहे होते हैं, तो वास्तव में इन संहिताओं में अलग-अलग चीजें देखते हैं जो उन्हें सोचने पर मजबूर करती हैं; शायद वे इन्हें व्यवस्थित कर सकते हैं।

3 कानून संहिताओं में वेदी का स्थान

मैं कुछ ऐसा उपयोग करने जा रहा हूँ जो व्यवस्थाविवरण 12 में दिखाई देता है। तो, जिस तरह से ये विभिन्न संहिताएं, पवित्रता संहिता, वाचा संहिता, व्यवस्थाविवरण संहिता, वे वेदी पर चढ़ाए जाने वाले बलिदानों के बारे में कैसे बोलते हैं। इसलिए, यदि हम उस वेदी कानून को लेते हैं, और हम वाचा संहिता से एक लेते हैं, जो निर्गमन में होता है, तो हम इसे निर्गमन या लेविटस 17 में पवित्रता संहिता में पा सकते हैं। और फिर व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 में एक, एक जिसके बारे में हम क्षण भर बात करेंगे। हम पाएंगे कि ये वास्तव में वेदियों के बारे में कुछ अलग ही कहते हैं। बहुत सुसंगत विषय हैं कि सभी पवित्र प्रसाद वेदी पर, यानी भगवान के सामने प्रस्तुत किए जाते हैं।

हालाँकि, जिस चीज़ पर हमने ध्यान दिया, जब हम वाचा संहिता को देखते हैं, जैसा कि हम निर्गमन में पढ़ते हैं, तो यह बताती है कि कई अलग-अलग वेदियाँ हो सकती हैं। यह समझ में आता है क्योंकि एक्सोडस में लोग काफी आगे बढ़ रहे हैं। तो जैसे ही टैबरनेकल चलता है, वहाँ एक नई वेदी बनाई जाती है। और इसलिए, जब भी कोई नई वेदी बनाई जाती है, तो आप इस प्रकार की बलि चढ़ा सकते हैं।

जब हम लैव्यिकस पढ़ते हैं, तो लैव्यिकस मानता है कि केवल एक ही वेदी है, और यह एक स्थिर स्थान के सामने एक वेदी है, जो तम्बू है।

व्यवस्थाविवरण लगभग एक संक्रमणकालीन कानून प्रतीत होता है। इसलिए, जहां हमारी धारणा थी कि एक्सोडस में संभवतः कई वेदियां हैं और लेवितिकस में केवल एक वेदी की धारणा है, व्यवस्थाविवरण वह संक्रमण बिंदु प्रतीत होता है जो कह रहा है, अब से, केवल एक वेदी। और आप केवल इसी वेदी पर पवित्र बलिदान दे सकते हैं। लेकिन तब व्यवस्थाविवरण कहता है कि आप अपने शहर के द्वारों पर बलिदान देना जारी रख सकते हैं, जब तक आप साझा कर रहे हैं और वे आपके आधिकारिक दशमांश प्रसाद या भगवान के लिए आधिकारिक प्रसाद नहीं हैं। लेकिन आप अभी भी जानवरों को मार सकते हैं और मांस साझा कर सकते हैं और अपने शहरों में दावत कर सकते हैं। इसलिए, व्यवस्थाविवरण केवल एक ही स्थान पर कुछ हद तक अनुमोदक और बहुत सख्त लगता है। और फिर भी विकल्पों की अनुमति देते हुए, लैव्यव्यवस्था केवल एक ही स्थान पर; इतना ही। पलायन, संभवतः अनेक होंगे।

तो यह उन उदाहरणों में से एक होगा जहां विद्वान इन विभिन्न कोडों और इन विभिन्न कानून कोडों की शब्दावली को देखते हैं, और वे कहते हैं कि यह हमें अलग-अलग समय अवधि दिखाता है।

ठीक है, तो फिर सवाल यह हो जाता है कि व्यवस्थाविवरण कब लिखा गया है, या हम इनमें से किसी भी कानून संहिता की तारीख कब बता सकते हैं?

तो अब हमारे पास है; मैं आपको कुछ अलग-अलग विद्वानों के बारे में बताने जा रहा हूँ जो व्यवस्थाविवरण की विद्वता के इतिहास में बेहद प्रभावशाली रहे हैं।

लेखकत्व पर आधुनिक छात्रवृत्ति का सर्वेक्षण

और फिर, जब हम अंत तक पहुंचते हैं, तो बहुत सारे समकालीन विद्वान आगे बढ़ रहे हैं और व्यवस्थाविवरण के कई अलग-अलग क्षेत्र हैं, लेकिन ये वही हैं जिनके बारे में हर व्यवस्थाविवरण टिप्पणी में बात की जाती है। आप उन्हें वास्तव में प्रकाशित होने वाली नई

बाइबलों में देखना शुरू करने जा रहे हैं। ये लोग वास्तव में दिख रहे हैं; उनके नाम बाइबिल के परिचय में दिखाई दे रहे हैं। इसलिए, कम से कम इस बात से परिचित होना अच्छा है कि वे कौन हैं और उन्होंने क्या विचार प्रस्तुत किए हैं।

तो, मैं आधुनिक छात्रवृत्ति से शुरुआत करने जा रहा हूँ। हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं कि कैसे लेखकत्व का मुद्दा मध्य युग और 17वीं शताब्दी में पहले से ही सामने आ रहा था। जब हम 19वीं शताब्दी में पहुँचते हैं, तो हमारे पास एक बहुत ही मजबूत यूरोपीय विद्वता होती है जो परिदृश्य में प्रवेश करती है, और यह व्यवस्थाविवरण के साथ बहुत सारी विद्वता के पाठ्यक्रम को बदल देती है।

डेवेट

इसमें से कुछ इस सज्जन डेवेट के कारण है। वह एक जर्मन विद्वान था जिसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का अध्ययन किया था। उन्होंने कहा कि जब हम व्यवस्थाविवरण को देखते हैं, तो व्यवस्थाविवरण 12 से 26 के नियम एक निश्चित प्रकार की कार्रवाई निर्धारित करते हैं जिसे हम योशियाह तक इज़राइल के बहुत से इतिहास में नहीं देखते हैं। राजा योशियाह हमारे महान सुधारक राजाओं में से एक हैं। वह 2 किंग्स, 2 किंग्स की पुस्तक में दिखाई देता है। तो डेवेट, उनके विचारों में से एक यह था कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक संभवतः योशियाह के शासन से ठीक पहले लिखी गई थी। और यदि आप 2 राजाओं में पढ़ते हैं, तो योशियाह वही है जब वे मंदिर का नवीनीकरण कर रहे थे, मंदिर के पुजारियों में से एक को कानून की पुस्तक मिली, जैसा कि इसे कहा जाता है। और वे उसे बाहर निकालते हैं, और वे उसे भविष्यवक्ता हुल्दा के पास भेजते हैं, और वह पुष्टि करती है कि यह मूल पुस्तक में है। योशियाह इसे पढ़ता है, और वह आश्चर्यचकित रह जाता है कि इस्राएली समाज कानून की इस पुस्तक से कितनी दूर है। और यह आरंभ करता है, और जन्म देता है, यह संपूर्ण विशाल सुधार जिसका योशियाह को प्रमुख कहा जाता है। ठीक है, तो डेवेट का कहना है कि कानून की किताब योशियाह से ठीक पहले लिखी गई होगी, और फिर कानून की किताब शायद व्यवस्थाविवरण है। और इसलिए व्यवस्थाविवरण योशियाह से ठीक पहले लिखा गया था। योशियाह के सुधारों के लिए व्यवस्थाविवरण उत्तरदायी है।

वह कुछ बातों की ओर इशारा करते हैं। तो एक तथ्य यह है कि इस समय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, असीरियन अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर एक बड़ा राष्ट्र थे, और बाद के अनुभव से, बेबीलोनवासी दिव्य पूजा में बहुत बड़े थे।

और हम व्यवस्थाविवरण में कुछ स्थानों पर यह विचार या मान्यता देखते हैं कि वहाँ दिव्य पूजा होती है। और यह आम तौर पर व्यवस्थाविवरण अध्याय 12, या अध्याय 4 के रूप में आता है, जब आकाशीय पिंडों की पूजा करने पर प्रतिबंध होता है। तो, डेवेट का कहना है कि भले ही ड्यूटेरोनॉमी को दिव्य पूजा के बारे में पता हो, इसका मतलब यह होना चाहिए कि यह उस समय की अवधि के दौरान रखा गया है जब असीरिया और बेबीलोन सितारों की पूजा कर रहे थे। तो संभावित रूप से, लेकिन यह उनके बिंदुओं में से एक है।

वह इस तथ्य की ओर भी इशारा करते हैं कि जब हम पहले इज़राइली इतिहास में ऐतिहासिक आख्यानो को पढ़ते हैं, तो बहुत सारी अलग-अलग वेदियाँ होती हैं जिन्हें लोग विदेशी देवताओं की नहीं बल्कि यहोवा की बनाते और पूजा करते हैं। और इसलिए, उदाहरण के लिए, हमारे पास सुलैमान है; मंदिर बनाने के बाद, वह गिबोन के पास जाता है, और गिबोन में, वह भगवान की वेदी पर एक और बलिदान चढ़ाता है, और यहीं पर वह भगवान से ज्ञान मांगने के बारे में बातचीत करता है।

या यदि आप 1 राजाओं के बारे में सोचते हैं, तो 1 राजाओं में, एलिय्याह, भविष्यवक्ता, इसराइल के उत्तरी साम्राज्य के राजा अहाब का सामना कर रहा है और बाल के सभी झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ माउंट कार्मेल पर चढ़ जाता है। और वह एक वेदी भी बनाता है। और इनमें से प्रत्येक कहानी में, और भी कई कहानियाँ हैं, उनमें से प्रत्येक कहानी में, वे वेदियाँ निषिद्ध या गलत प्रकार का विचार नहीं लगती हैं।

और इसलिए, डेवेट उस ओर इशारा करते हैं और कहते हैं कि इज़राइली इतिहास में पहले, यह ठीक प्रतीत होता है। उनके पास यहोवा के लिए अन्य वेदियाँ थीं, लेकिन कई वेदियाँ थीं, लेकिन हिजकिय्याह और योशिय्याह के सुधारों के कारण, उन्हें अब अनुमति नहीं दी गई थी।

इसलिए, वह 8वीं और 7वीं शताब्दी के अंतर्राष्ट्रीय प्रभावों, वेदियों के विचार और दिव्य पूजा के विचार को लेते हुए कहते हैं, व्यवस्थाविवरण लिखा जाना चाहिए था; ऐसा लगता है कि यह योशियाह के संदर्भ को प्रतिबिंबित करता है।

जूलियस वेलहाउज़ेन

जूलियस वेलहाउज़ेन शायद अगले बहुत प्रसिद्ध विद्वानों में से एक हैं जो परिदृश्य और सुधारों में प्रवेश करते हैं या शायद विचार को थोड़ा सा मजबूत करते हैं। तो, वेलहाउज़ेन उन कानून संहिताओं के पाठ में भिन्नताओं को भी देखता है और कहता है, ठीक है, वहाँ वाचा संहिता, पवित्रता संहिता और ज्यूटेरोनोमिक संहिता है। यदि हम उन्हें क्रम में रख रहे हैं, तो वे कहाँ हैं? क्या हम उन्हें एक-दूसरे से अलग कर सकते हैं? क्या वे जो कर रहे हैं उसके आधार पर हम उन्हें डेट कर सकते हैं? खैर, शायद व्यवस्थाविवरण योशियाह का है।

और इसलिए, वह संपूर्ण पेंटाटेच से संबंधित इस संपूर्ण विचार को विकसित करता है। इसे दस्तावेज़ी परिकल्पना कहा जाता है। और शायद आपने इसके बारे में पहले भी सुना हो। तो, उन्होंने सोचा कि चार अलग-अलग स्रोत थे। और यह कि इन चार मूल ग्रंथों को पेंटाटेच बनाने के लिए एक साथ लाया गया था जो वर्तमान में हमारे पास है।

तो, उन्होंने सोचा कि चार अलग-अलग स्रोत हैं, जिनमें से एक को वह याह्विस्ट जे कहते हैं। दूसरे को, वह एलोहिस्ट, ई कहते हैं। ये सभी अलग-अलग कहानियों से आते हैं जो बताई जा रही हैं। वे उन कहानियों में भगवान के कौन से नाम दर्शाते हैं? उन्होंने कहा, ये पहले दो संभवतः संयुक्त राजशाही के समय के हैं। अंततः ये सभी कहानियाँ और इतिहास शायद शाऊल, डेविड और सुलैमान के समय में लिखे जा रहे थे।

उन्होंने कहा कि पुरोहित संहिता में हमारे पास ऐसे दस्तावेज हैं जहाँ पवित्र व्यवहार, या तम्बू में व्यवहार, या मंदिर में व्यवहार से संबंधित बहुत सख्त विनियमित कानून हैं। वह उन सभी को पुरोहिती कहता है। और व्यवस्थाविवरण में, उन्होंने वास्तव में व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब

को पहचान लिया, और व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब अपनी ही अनोखी चीज़ लगती है। तो, इसका अपना स्रोत हो जाता है और यह अपना दस्तावेज़ बन जाता है।

प्रीस्टली दस्तावेज़ और ड्यूटेरोनोमिक दस्तावेज़ की डेटिंग समय के साथ बदल गई है जब लोग ऐसा सोचते हैं। अब इस दस्तावेज़ी परिकल्पना ने बहुत लंबे समय तक पेंटाटेच इतिहास और विद्वता के इतिहास पर शासन किया है। वास्तव में, 1970 के दशक तक।

दस्तावेज़ी परिकल्पना से परे

1970 के दशक में, हमारे पास ऐसे लोग आने लगे जिन्होंने दस्तावेज़ी परिकल्पना का अध्ययन किया था, जिन्होंने बाइबिल के बारे में वास्तव में दिलचस्प चीज़ें खोजी थीं, और जो बाइबिल में ऐसे छोटे विवरणों पर ध्यान दे रहे थे। दिलचस्प बातचीत सामने आ रही थी। लेकिन यह उस बिंदु पर भी पहुंच गया जहां लोग पेंटाटेच को छोटे-छोटे, छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ रहे थे, और यह उस बिंदु पर पहुंच गया जहां हम सार और समग्र कहानी और समग्र इतिहास को खो रहे थे। 1970 के दशक में, हमने बाइबिल को साहित्य के रूप में, इसे एक निर्मित, सुंदर, सामंजस्यपूर्ण समग्रता के रूप में देखने का पुनर्जन्म शुरू किया। तो 1970 के दशक में, एक पूरी तरह से अलग संतानें थीं और पेंटाटेच का अध्ययन कैसे हुआ।

अब व्यवस्थाविवरण से संबंधित, यदि हम व्यवस्थाविवरण संहिता पर वापस जाएं, तो हमारे पास वास्तव में तीन और प्रभावशाली विद्वान हैं जो हमें विद्वता का पथ दिखाएंगे।

पहला मार्टिन नोथ है, इसलिए वह वास्तव में दिलचस्प है क्योंकि उसने व्यवस्थाविवरण को देखा और उसने राजाओं के माध्यम से जोशुआ के ऐतिहासिक आख्यानों को देखा। उन्होंने कहा कि इन किताबों में काफी समानता है। वह यह कहने वाले पहले लोगों में से एक थे, शायद, शायद, व्यवस्थाविवरण पेंटाटेच, उत्पत्ति, निर्गमन, लेविटस और संख्याओं से संबंधित नहीं है। शायद व्यवस्थाविवरण वास्तव में ऐतिहासिक आख्यानों का परिचय है। इसलिए उन्होंने इसे अलग तरह से समूहीकृत किया और कहा कि इन ऐतिहासिक आख्यानों को पेश करने के लिए व्यवस्थाविवरण

लिखा गया था, और यह एक तरीका था, जब उन पुस्तकों को लिखा गया था, तो यह इस्राएलियों के लिए कानून के खिलाफ खुद का न्याय करने का एक तरीका था।

तो, व्यवस्थाविवरण में चीजें हैं; उदाहरण के लिए, जब हम व्यवस्थाविवरण 17 पर आते हैं, तो वहां राजाओं और समाज में राजा के स्थान से संबंधित एक बहुत ही अनोखा कानून है। और इसका प्रयोग, नोथ कहेगा, हर राजा के लिए किया जाता है, फिर इसकी तुलना व्यवस्थाविवरण में कानून से की जाती है।

वॉन राड

अब, गेरहार्ड वॉन राड, जो एक जर्मन विद्वान भी हैं, ने इसके बजाय इस सभी डेटा को देखा और कहा कि जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह बहुत मायने रखता है, सिवाय इसके कि हमें यह क्यों कहना होगा कि ड्यूटेरोनॉमी जोशिया के सुधारों से ठीक पहले लिखी गई थी?

वे साथ-साथ चलते प्रतीत होते हैं। व्यवस्थाविवरण में बहुत कुछ ऐसा कहा गया है जो विशेष रूप से योशियाह के कार्यों को दर्शाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि व्यवस्थाविवरण योशियाह से ठीक पहले लिखा गया था। यह योशियाह से पहले कितने भी वर्षों तक अस्तित्व में रहा होगा। इसलिए, हम इस तथ्य का उपयोग नहीं कर सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण और योशियाह व्यवस्थाविवरण को आज तक साथ-साथ चलते हैं, क्योंकि व्यवस्थाविवरण का एक रूप संभवतः योशियाह के समय तक अस्तित्व में था। तो, वॉन रैड सबसे पहले आने वालों में से एक है और कहता है कि हर कोई बस एक पल रुकें; व्यवस्थाविवरण संभावित रूप से बहुत पुराना हो सकता है।

खैर, गॉर्डन वेन्हम, जो यूके में हाल ही में विद्वान हैं। उन्होंने कहा कि व्यवस्थाविवरण में निश्चित रूप से वेदी के लिए चुने गए स्थान और उन कानूनों को ध्यान में रखा गया है जिन्हें हम व्यवस्थाविवरण 12 में देखेंगे। तो, हाँ, यह सच है; वहाँ केवल एक ही जगह है। और व्यवस्थाविवरण इस बारे में बहुत विशिष्ट है। लेकिन उन सभी विद्वानों के विपरीत जो पहले आए थे, और इन सभी विद्वानों ने, जिन्होंने कहा था, व्यवस्थाविवरण कहता है कि केवल एक ही स्थान हो सकता है,

व्यवस्थाविवरण को योशियाह से जुड़ा होना चाहिए। इसलिए व्यवस्थाविवरण के चुने हुए स्थान का अर्थ यरूशलेम होना चाहिए।

गॉर्डन वेन्हम ने एक कदम पीछे हटते हुए कहा कि जरूरी नहीं। व्यवस्थाविवरण निश्चित रूप से कहता है कि केवल एक ही स्थान हो सकता है, लेकिन वह एक ही स्थान है, यह एक समय में केवल एक ही स्थान है, अनेक स्थान नहीं।

इसलिए, हम ऐतिहासिक आख्यानो में जानते हैं कि यरूशलेम में पूजा स्थल होने से बहुत पहले इस्राएलियों के पास शीलो में एक पूजा स्थल था। और इसलिए शायद यह है, गॉर्डन वेन्हम कहते हैं, हम योशियाह के साथ इन सभी समानताओं के आधार पर व्यवस्थाविवरण की तारीख नहीं बता सकते क्योंकि व्यवस्थाविवरण को जो कानून मिल रहा है वह वास्तव में एक समय में सिर्फ एक वेदी है, केवल भगवान के पूजा स्थल के सामने।

ठीक है, तो जाहिर है, बहुत भ्रम हो गया है। और भी विद्वान हैं; सैंडी रिक्टर एक महान विद्वान हैं जिन्होंने व्यवस्थाविवरण का अध्ययन करने में बहुत समय बिताया। वह व्यवस्थाविवरण 12 को देखती है और यहां गॉर्डन वेन्हम का दृष्टिकोण बिल्कुल पसंद नहीं करती है, लेकिन वह कहती है कि इस कानून और अध्याय 12 का योशियाह के सुधार से कोई लेना-देना नहीं है, जितना कि यह उस स्थान के बारे में बात कर रहा है जहां भगवान "अपना नाम रखना चुनते हैं।" यह वाक्यांश वास्तव में यह बताने का एक तरीका है कि भगवान एक क्षेत्र पर अपना नाम रख रहे हैं, जैसे प्राचीन निकट पूर्वी राजा जमीन में एक स्टेला डालते थे, इस बड़ी पट्टिका पर अपना नाम रखते थे, और कहते थे, मैं इस भूमि का मालिक हूं। और इसलिए परमेश्वर उस भूमि पर उसी प्रकार का दावा कर रहा है जिस पर इज़राइल दावा करने जा रहा है। दूसरे शब्दों में, व्यवस्थाविवरण 12 यह कहने का एक और तरीका है कि इस देश में ईश्वर ही एकमात्र सच्चा राजा है, और हमारा समाज राजा के रूप में ईश्वर के इर्द-गिर्द काम करेगा।

लेखकत्व निष्कर्ष

इसलिए, जहाँ तक आपको व्यवस्थाविवरण में एक लेखक का बहुत विशिष्ट नाम और तारीख बताने की बात है, मैंने वास्तव में आपके इतने सारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया होगा। और मैंने ऐसा जानबूझकर किया है क्योंकि मुझे लगता है कि उस प्रश्न का उत्तर देने का वास्तविक ईमानदार तरीका यह है कि हम अभी तक नहीं जानते हैं।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि इससे व्यवस्थाविवरण के हमारे अध्ययन में बाधा आनी चाहिए। हम पहले ही देख चुके हैं कि यह कितना सुंदर है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यह कितनी अच्छी तरह से बनाया गया है, और इसमें कुछ गाने शामिल हैं, जो गाने व्यवस्थाविवरण के अंत में दिखाई देते हैं वे बहुत पुराने और प्राचीन हिब्रू गाने हैं। तो, यह इस्राएलियों के इतिहास का एक पूरा संग्रह प्रस्तुत करता है, और यह एक बहुत अच्छी तरह से तैयार की गई और बहुत सुंदर किताब है।

व्यवस्थाविवरण का संदेश

मैं अभी भी व्यवस्थाविवरण को यह कहने के तरीके के रूप में पढ़ना पसंद करता हूँ कि जगह में निवेश करने, समाज में निवेश करने के बारे में बाइबिल का दृष्टिकोण क्या है? तो, अगर भगवान नीचे आएँ और हमें बताएं, तो यह आपके समुदाय के निर्माण का सबसे अच्छा तरीका है और आपके आस-पास के लोगों में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका है ताकि भूमि विकसित हो ताकि आप मानव के रूप में विकसित हो सकें, और ताकि आपके पास एक भगवान के साथ अच्छे संबंध और ये सभी चीजें एक साथ काम करती हैं। व्यवस्थाविवरण वह पुस्तक है जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए। इसलिए, मुझे इस पर ध्यान केंद्रित करना पसंद है कि कैसे व्यवस्थाविवरण हमें समाज का निर्माण करने के लिए कह रहा है। इसलिए, मैं उस दृष्टिकोण को कानून संहिता में अपने साथ ले जा रहा हूँ। तो अब हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 को देखना शुरू करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 12

इसलिए, व्यवस्थाविवरण 12 का आयोजन किया गया है, मैं कहूंगा, लगभग एक दोहरे फ्रेम के साथ जहां हम बहुत समान विचारों के साथ शुरू और समाप्त करते हैं। हमारे पास शुरुआत में कुछ छंद हैं जो कनानी पूजा की मनाही के बारे में हैं जिन्हें अध्याय के अंत में हमारे लिए दोहराया गया है, जहां फिर से हमारे पास कनानी पूजा की मनाही है। अध्याय 12 का अधिकांश हिस्सा इस बारे में है कि इस्राएलियों की पूजा वास्तव में कैसी दिखनी चाहिए। तो, यह अध्याय का हृदय है।

व्यवस्थाविवरण 12: आरंभ और अंत फ्रेम

तो आइए आगे बढ़ें और इनमें से कुछ छंदों को एक साथ पढ़ें। तो, मैं व्यवस्थाविवरण 12 में पढ़ रहा हूं। तो, यह एक परिचय के साथ शुरू होता है, "ये मूर्तियाँ और न्यायदंड हैं, जिन्हें तुम उस देश में ध्यानपूर्वक देखना, जिसे तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है जब तक तुम पृथ्वी पर जीवित हो, तब तक अधिकार में रहो।" यह परिचित लगता है। हमने इसे लगभग अधिकांश अध्यायों की शुरुआत में ही सुना है।

इसी तरह हम निष्कर्ष निकालने जा रहे हैं। इसलिए, यदि आप अध्याय के अंत की ओर पलटते हैं, जब हम देखते हैं, ठीक है, हिब्रू, अंग्रेजी बाइबिल पर निर्भर करते हुए, यह एक प्रकार के सिंहावलोकन के साथ समाप्त होता है। "जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, उसे करने में चौकसी करना। तू न तो उसमें कुछ जोड़ना, न कुछ घटाना।"

कनानी पूजा की मनाही

अब आइए कनानी पूजा को प्रतिबंधित करने वाले इस कनानी खंड को देखें। यह वह भाग है जो वास्तव में अध्याय 12, व्यवस्थाविवरण के एक भाग को प्रतिबिंबित करता है और सुनने में बहुत समान लगता है जिसे हमने पहले छोड़ दिया था।

तो, श्लोक 2 में कहा गया है, "आप उन सभी स्थानों को पूरी तरह से नष्ट कर देंगे जहां वे राष्ट्र, जिन्हें आप से निकाल देंगे, हर ऊंचे पहाड़ पर, पहाड़ियों पर, एक सदाबहार पेड़ के नीचे

अपने देवताओं की पूजा करते हैं। आप उनकी वेदियों को तोड़ देंगे और उनकी वेदियों को तोड़ देंगे। पवित्र खम्भे। उनके अशेरा नाम को आग में जला दो। उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तों को काट डालो और उस स्थान से उनका नाम मिटा दो। तुम यहोवा के प्रति ऐसा व्यवहार न करना।

यह काफी कठोर लगता है, सिवाय इसके कि आइए एक सेकंड के लिए इसके बारे में सोचें।

हमने पहले एक व्याख्यान में कहा था कि स्थान और स्मृति जुड़े हुए हैं, है ना? यह जगह एबाल की तरह है, और गेरिज़िम भगवान के साथ एक अनुबंध अनुसमर्थन समारोह की तरह यादें रख सकता है। व्यवस्थाविवरण इससे काफी परिचित लगता है क्योंकि यह कहता है कि जब आप अंदर जाते हैं, तो पहले से ही पूजा की एक प्रणाली होती है, अन्य देवताओं की पूजा करने की स्मृति, जो इस स्थान के ताने-बाने में अंकित होती है। आपको इससे छुटकारा पाना होगा, है ना? इसलिए, हम इस विचार पर आगे बढ़ रहे हैं कि एक ईश्वर है, एक पूजा स्थल है। और फिर भी, जब हम देखते हैं कि भूमि पर रहने वाले लोग किस प्रकार पूजा करते हैं, तो सुनते हैं कि कितने अलग-अलग प्रकार के स्थान सूचीबद्ध हैं।

वे ऊँचे पहाड़ों पर, पहाड़ियों पर और हर हरे पेड़ के नीचे अपने देवताओं की सेवा करते हैं। इसलिए, यदि बहुत सारे स्थान हैं जहां अन्य देवताओं की स्मृति, पूजा की जाती है, और उन स्थानों से जुड़ी वस्तुएं हैं। तो, यह आता है, "और तुम्हें पवित्र स्तंभों को तोड़ना और मिटा देना चाहिए, अशेरिम या पवित्र तालाबों को आग से जला देना चाहिए। तुम उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियों को काट डालोगे। उस स्थान से उनका नाम मिटा दो।"

अब, जब हम उस "उनके नाम" पर पहुँचते हैं, तो उनका नाम मिटा दें। आप इसे उस स्थान से कनानियों का नामोनिशान मिटाने के रूप में पढ़ सकते हैं। हम इसे उस स्थान से उनके देवताओं के नाम मिटा देने के रूप में पढ़ सकते हैं। तो, हम नष्ट कर रहे हैं, इस स्थान पर जा रहे हैं जो वर्तमान में इन सभी अन्य लोगों की पूजा की स्मृति को संजोए हुए है, और यह एक प्रकार की पूजा है जो भगवान को अप्रसन्न करती है। अतः जब तुम भूमि में जाओ तो उसे मिटा डालो, उसे

मिटा डालो; यह भूमि के पास मौजूद इन पुरानी यादों को उकेरने या चिकना करने और पूजा की एक नई प्रकार की आदत बनाने जैसा है।

प्रभु को उसी स्थान पर खोजना जो वह चुनेगा

तो यह अध्याय का मध्य भाग है। तो यह इस तरह से शुरू होता है: "तुम उस स्थान पर यहोवा की खोज करना जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से अपना नाम निवास करने के लिथे चुन लेगा, और तुम वहीं आना।" तो एक मान्यता है कि इस बहुत ही विविध देश में जनजातियाँ जा रही हैं, लेकिन भगवान केवल एक ही स्थान को चुनेंगे और पहचानेंगे कि इसे भगवान चुन रहे हैं, न कि इस्राएली चुन रहे हैं।

"वहाँ तुम अपने होमबलि, अपने बलिदान, अपने दशमांश, अपने हाथ का अंशदान, अपनी मन्नत की भेंट, अपनी स्वतंत्र इच्छा की भेंट, अपने गाय-बैल और भेड़-बकरियों के पहलौठे को ले आना।" वहाँ भी तू और तेरा घराना अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना, और अपने उन सब कामोंमें आनन्द करना जिनमें यहोवा तेरे परमेश्वर ने तुझे आशीष दी हो। तुम वह बिल्कुल नहीं करोगे जो हम आज यहां कर रहे हैं; हर एक मनुष्य वही कर रहा था जो उसकी दृष्टि में ठीक है। क्योंकि तुम अभी तक उस विश्रामस्थान में नहीं आए हो, जो एक विरासत है जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है।" उस पल में, जब आप भूमि में जाते हैं तो आप उसकी पूरी पहचान सुनते हैं, जैसा कि हम नहीं करते हैं। इस बिंदु तक कार्य कर रहे हैं। जब हम उस सूची को देखते हैं, तो हम उन सभी विभिन्न प्रकार के प्रसादों की एक सूची देखते हैं जो आम तौर पर इस्राएली भगवान के सामने लेते थे। व्यवस्थाविवरण यह कहने में बहुत विशिष्ट है कि यह आप और आपका पूरा परिवार है। शामिल है। तो, हर कोई एक ही स्थान पर भगवान की पूजा करने जाता है।

चुने हुए स्थान पर बलि चढ़ाना

तो आयत 10 में, "जब तुम यरदन पार करके उस देश में रहने लगोगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत में देने को देता है, और वह तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम देगा। ताकि तुम निडर रहो, तब वह आ जाएगा उस स्थान के विषय में जो स्थान तेरा परमेश्वर

यहोवा आपके नाम के लिथे निवास करने के लिथे चुन लेगा वहां तू आपके होमबलि, और मेलबलि, दशमांश, हाथ की भेंट, और सब उत्तम मन्नत की भेंट जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूंगा वह सब ले आना। जो तुम यहोवा के साम्हने मन्नत मानोगे।" तो, फिर से सभी पवित्र प्रकार के प्रसाद की एक सूची।

"और तू आपके बेटे-बेटियों और दास-दासियोंसमेत आपके परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना, और जो लेवीय तेरे फाटक के भीतर हो सो उसका तेरे साय कोई निज भाग वा निज भाग न हो। सावधान रहना, कि तू अपना होमबलि न करना। आपके द्वारा देखे जाने वाले प्रत्येक धार्मिक स्थान पर प्रसाद। परन्तु केवल उस स्थान पर जिसे प्रभु आपके गोत्रों में से किसी एक में चुनता है।"

तो फिर, हमारे पास पवित्र प्रसादों की यह सूची है जो केवल एक चुने हुए स्थान पर ही दिए जाने चाहिए। और वहाँ सभी को आमंत्रित किया जाता है, पुरुष, महिला, गरीब, अमीर, दास और ज़मींदार। सबको जाना है. उस मेज पर सभी का स्वागत है।

श्लोक 15 में, यह व्यवस्थाविवरण का एक अनोखा भाग है क्योंकि यह कहता है, "हालाँकि, आप किसी भी द्वार के भीतर वध कर सकते हैं और मांस खा सकते हैं।" तो, जब इसका अर्थ द्वार होता है, जब यह द्वार कहता है, तो इसका मतलब विभिन्न शहरों में से किसी एक से होता है जहां आप रहते हैं। तो, अपने शहर में आप मांस का वध कर सकते हैं। "तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की उस आशीष के अनुसार जो तुम्हें देता है। अशुद्ध और शुद्ध, जैसे चिकारे और हिरन का मांस खा सकते हैं। केवल तुम उसका लोहू न खाना। तुम उसे भूमि पर उंडेल देना।" पानी।" इसलिए, आपको द्वार पर किसी भी पवित्र दशमांश और प्रसाद को खाने की अनुमति नहीं है, लेकिन आप उसी प्रकार की गतिविधि को दोहरा सकते हैं; तुम फाटकों के भीतर किसी जानवर का वध कर सकते हो, परन्तु जब तुम फाटकों के भीतर ऐसा करते हो, तो सभी को खाने का स्वागत है - शुद्ध, अशुद्ध, गरीब अमीर, शहर के फाटकों में लेवी, मालिक, हर कोई वहाँ हो सकता है।

स्थानों का वितरण

तो, यह इज़राइली पूजा है। मैं यह दिखाने जा रहा हूँ कि यह एक बहुत ही कच्चा चित्र है। यह बहुत तकनीकी नहीं है; हो सकता है कि आप में से कोई मेरे लिए इसे तैयार करने का अधिक तकनीकी तरीका समझ सके। लेकिन यह एक चित्र होगा, मैं कहूँगा, जो व्यवस्थाविवरण की वेदी संहिता का प्रतिनिधित्व करता है। तो, व्यवस्थाविवरण 12 में, हमें जो मिलता है वह यह है कि एक चुना हुआ स्थान है। यह वह स्थान है जिसे भगवान ने अपना नाम रखने के लिए चुना है। यह वह स्थान है जो भगवान को राजा, मालिक और भूमि के निष्पादक के रूप में दर्शाता है।

इस स्थान से बहुत सारे वितरित स्थान जुड़े हुए हैं। तो, केंद्र में, हमारे पास भगवान और उसका चुना हुआ स्थान है, लेकिन बाकी हर जगह, हमारे पास विभिन्न शहर और समुदाय हैं। तो, जिस तरह से मैंने इसे निकाला है, हमारे पास चुने हुए स्थान से विभिन्न प्रकार की दूरियों के छोटे वृत्त और बड़े वृत्त हैं। लेकिन वे सभी उन बलिदानों के कारण जुड़े हुए हैं जो वे सभी चुने हुए स्थान पर लाते हैं।

तो चाहे आप किसी बड़े शहर से आए हों या शायद किसी छोटे गांव से, हो सकता है कि आप बहुत दूर थे, या शायद आप काफी करीब हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हर कोई एक ही स्थान पर जाता है, और यह इस्राएलियों द्वारा नहीं चुना गया है, यह भगवान द्वारा चुना गया है - यहां पवित्र बलिदान हैं। अब आप इन सभी अन्य वितरित स्थानों पर वापस लौट सकते हैं। आप यहां मांस भी खा सकते हैं। आप यहां अपने समुदाय के साथ भी उत्सव मना सकते हैं, लेकिन वे केवल तभी पवित्र होते हैं जब आप एक चुने हुए स्थान पर एक सच्चे ईश्वर के सामने खड़े होते हैं।

एक विलक्षण एकीकृत राष्ट्र का जन्म

यह वास्तव में हमारे लिए महत्वपूर्ण है जब हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में घटित होने वाली कुछ बातों पर विचार करते हैं। तो, हम राष्ट्रीयता के इस विचार को जन्म लेते हुए देखना शुरू कर रहे हैं। विचार यह है कि वे मिस्र में गुलाम रहे हैं। वे जंगल में लोगों के एक समूह के रूप में भटकते रहे हैं। लेकिन अब वे एक ही देश में जा रहे हैं, और मुझे एक ही लोग बनने की ज़रूरत है। और इसलिए, उन्हें पूरी तरह से आदिवासी मानसिकता और आदिवासी विश्वदृष्टि से बाहर निकलकर एक राष्ट्र विश्वदृष्टिकोण में बदलना होगा।

इसलिए, हम पहले से ही यह देखना शुरू कर रहे हैं कि व्यवस्थाविवरण उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब वे एक एकजुट राष्ट्र के रूप में कार्य करना शुरू करेंगे। यह व्यवस्थाविवरण में काफी दिलचस्प है क्योंकि हालांकि कुछ अलग-अलग समय हैं, व्यवस्थाविवरण मानता है कि जनजातियाँ हैं और जनजातियाँ अक्सर अस्तित्व में रहती हैं। व्यवस्थाविवरण लोगों को समान रूप से भाइयों, भाइयों और बहनों के रूप में संदर्भित करता है, और यह उन रेखाओं को धुंधला कर देता है जो लोगों को खंडों और समूहों में विभाजित करती हैं।

हमें लोगों की एकता को भी पहचानने की जरूरत है. तो, आप लोगों के विविध समूह को कैसे लेते हैं और उन्हें एकजुट करते हैं? खैर, वे उस एक कानून के तहत एकीकृत हैं जो भगवान ने उन्हें दिया है। इसलिए लोगों में एकता इसलिए आती है क्योंकि वे सभी एक ही कानून की छत्रछाया में काम कर रहे हैं। यह कानून भगवान द्वारा दिया गया था. यह परमेश्वर का वचन है. यह उनके कहने का तरीका है कि आप इस चुनी हुई जगह पर इंसान के रूप में अपना सर्वोत्तम विकास कैसे कर सकते हैं।

विविध भूमि में राष्ट्र को एकजुट करना

हमें याद रखने की आवश्यकता है क्योंकि हमने देखा है, जैसे हमने देखा, भूमि की तस्वीरें, और हमने देखा कि भूमि कितनी विविध है। जब हमने व्यवस्थाविवरण 7 को देखा, मूल रूप से, हमने इस बारे में बात की कि उस भूमि में रहने वाले लोगों को एकजुट करना कितना मुश्किल है क्योंकि हमारे पास तटीय मैदान है, और हमारे नीचे दक्षिण में रेगिस्तानी रास्ता है, और हमारे पास पहाड़ी देश में खेती का क्षेत्र है। . आप ऐसे विविध भूभाग में रहने वाले लोगों को कैसे लेते हैं और उन्हें एक जन समूह के रूप में एकजुट करते हैं? खैर, व्यवस्थाविवरण एक नियम पर ध्यान केंद्रित करके ऐसा करता है। यह लोगों से कहता है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप तट पर रहते हैं, यदि आप खेती वाले इलाके में रहते हैं, यदि आप जंगल में चरवाहे हैं, यदि आप दक्षिण की ओर रहते हैं जहां आप मुश्किल से जीवित रह सकते हैं, हर कोई परवाह किए बिना वे जिस इलाके में रहते हैं, वहां याद रखने लायक एक चुनी हुई जगह की यात्रा करते हैं। यह एक ईश्वर है, कानूनों का एक समूह है जो उन सभी को एक व्यक्ति के रूप में एक साथ खींचता है।

इसलिए, इस्राएलियों द्वारा पवित्र समझी जाने वाली हर चीज़ को परिवारों और गांवों में समाहित कर दिया गया। तो चलिए मैं इस अवधारणा को लेता हूं और उस तस्वीर पर वापस जाता हूं जो मेरे पास पहले थी।

राष्ट्रीय पहचान

हमारे पास एक चुनी हुई जगह है, और हमने राष्ट्रीयता के इस विचार, एक चुनी हुई जगह से अपनी पहचान लेने के बारे में बात की। यहां पर किसी एक बिंदु को चुनने के बारे में सोचें और कहें, वह आपका शहर है। वहीं से आपकी उत्पत्ति होती है। शायद यह बड़ा या छोटा हो; शायद यह करीब है, बहुत दूर है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

अब, मान लीजिए, मैं एक बिल्कुल अलग शहर से आना चुन रहा हूं। आप तट पर रह सकते हैं। मैं पहाड़ी देश में एक किसान हो सकता हूं, हम अलग-अलग संदर्भों से आते हैं, लेकिन हम खुद को याद दिलाने के लिए एक ही तरह की गतिविधियों में भाग लेने के लिए एक साथ मिलते हैं कि हम दोनों एक ही तरह के कानून के तहत मौजूद हैं जो एक ईश्वर से उत्पन्न हुआ है। एक पवित्र स्थान में।

इसलिए, हम एक तरह से अपनी पहचान और राष्ट्रीयता तथा एक साथ जुड़े होने की भावना को नवीनीकृत करते हैं क्योंकि हम दोनों इस बात पर सहमत हैं कि यह स्थान पवित्र है। मैं घर वापस जाना; हम अपने घरों में वही विचार लेकर आते हैं जो पवित्र है।

अब, वास्तव में, हम इस वितरित स्थान और इस स्थान, और इस स्थान और उस स्थान के बीच रेखाएँ खींच सकते हैं क्योंकि हम सभी एक ही तरह के कानून के तहत काम कर रहे हैं।

तो, याद रखें जब अध्याय 6 और 11 में व्यवस्थाविवरण सीमांत स्थानों को चिह्नित करने के बारे में बात करता है? हम परमेश्वर के नियम को अपने हृदयों पर लिख रहे हैं, या हम इसे अपने हाथों पर बांध रहे हैं, इसे अपने सिर के सामने, अन्य लोगों की धारणा, अपने घरों के चौखटों, शहर के द्वारों पर रख रहे हैं। वह कौन सा कानून है? यह वह कानून है जो एक ईश्वर से एक चुने हुए

स्थान पर उत्पन्न होता है। इसलिए, यह बहुत ही विविध प्रकार की भूमि में रहने वाले विविध लोगों के समूह को एक कानून संहिता के तहत एक राष्ट्र के रूप में एकजुट कर रहा है।

और फिर जब वे लोग वापस अपने अलग-अलग स्थानों पर पुनर्वितरित होते हैं, तो वे वास्तव में उस एकता को अपने साथ अपने गृहनगर में वापस ले जा रहे होते हैं।

मुझे लगता है, व्यवस्थाविवरण 12 का मूल यही है।

जब हम अध्याय 13, 14, और 15 की ओर बढ़ते हैं, जो अगला व्याख्यान होगा, तब भी वे एक चुने हुए स्थान पर ईश्वर और ईश्वर की पवित्रता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन फिर इस बारे में बात करते हैं कि इसे अपने आसपास के शहरों में कैसे वितरित किया जाए।

यह डॉक्टर सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण 12 पर सत्र 6 है।